

## उत्कृष्टता

संतों का दर्शन सौभाग्य से होता है। यह सौभाग्य कैसे जाग्रत होता है। रामचरितमानस में एक स्थान पर गोस्वामी तुलसीदासजी ने लिखा है – ‘अब मोहि भा भरोस हनुमंता। बिनु हरि कृपा मिलहिं नहि संता।।’ एक अन्य स्थान पर गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं—‘पुण्य पुंज बिनु मिलहिं न संता। संत संगति संसृति कर अंता।।’ अथवा जब पुण्य संचित हो जाता है तब अनेक पुण्य तथा अनेक जन्म के संकलित पुण्यों के प्रभाव से संत का दर्शन होता है।

एक जिज्ञासु ने स्वामी राजेशानन्दजी से यह प्रश्न किया कि स्वामीजी यह बताइए कि दोनों में से कौन सी बात सही है। राजेशानन्दजी ने कहा कि दोनों ही बातें सही हैं। उस जिज्ञासु ने पुनः प्रश्न किया कि यह कैसे हो सकता है? तब राजेशानन्द जी ने शंका का समाधान करते हुए कहा कि— संचित पुण्य के प्रभाव से मनुष्य को सत्संग करने की प्रेरणा मिलती है और वह संतों की खोज करके उनका दर्शन करता है। जब तक पुण्यों का पर्याप्त संचय न हो तब तक कितना ही खोजें संत नहीं मिलते परन्तु जब हरि कृपा होती है तो, संत को सज्जन से मिलने की प्रेरणा देते हैं और संत स्वयं चलकर सत्संग के लिए आते हैं। संचित पुण्य के प्रभाव से व्यक्ति संत तक जाता है और हरि कृपा से संत व्यक्ति तक जाता है।

किन्तु आज का अवसर विलक्षण है। न तो हम चलकर इन संतों के धाम तक पहुंचे हैं और न ही संत चलकर हमारे घर तक आए हैं। कुछ हम चले हैं, कुछ वे चले हैं और उत्कृष्टता के चौराहे पर हमारा मिलाप हो गया है।

उत्कृष्टता के गुण अर्जित करने के लिए पात्रता चाहिए। व्यक्ति में विनम्रता और उत्कृष्टता के गुण अपनी ओर आकर्षित करने की चाह हो तो उत्कृष्टता के गुण दौड़कर उसके पास आते हैं और उसके व्यक्तित्व को समृद्ध कर देते हैं। सड़क मजबूत होती है और पहाड़ मजबूत भी होता है और टीचा भी पर जब वर्षा आती है तो पानी न तो पहाड़ पर रुकता है न सड़क पर। बह जाता है और व्यर्थ जाता है। ‘मानस’ में गोसांईजी लिखते हैं— ‘सिमिट-सिमिट जल भरहिं तलाबा, जिमि सद्गुण सज्जन पहिं आवा’। जो विनम्र होकर कहीं नीचे मौन बैठा होता है, व्यक्तित्व जिनका गहरा होता है, वर्षा का पानी कहीं भी हो सिमट कर उनके पास ऐसे एकत्रित हो जाता है जैसे सज्जन के पास सद्गुण चले आते हैं।

उत्कृष्टता एक मार्ग है श्रेष्ठता की पराकाष्ठा तक पहुंचने का। इसके लिए जीवन में एक आचार संहिता का पालन करना आवश्यक है। जिसमें विधि और निषेध (**Do's and don'ts**) दोनों का समावेश रहता है। यह करो और यह न करो।

चित्रकूट के स्वामी रामभद्राचार्यजी एक पहुंचे हुए तपोनिष्ठ विद्वान् संत हैं। वे प्रज्ञा चक्षु हैं। दिनांक 22.08.2007 को एक अनूठा संयोग हुआ। प्रयागराज में ‘लोक जागरण’ एवम् ‘तुलसी शोध संस्थान’ नामक संस्था ने स्वामीजी को ‘तुलसी सम्मान’ से अलंकृत किया और उन्हें यह अलंकरण प्रदान करने का सौभाग्य मुझे मिला। इस अवसर पर अलंकरण का प्रत्युत्तर देते हुए स्वामीजी ने जो कहा उसमें एक बात बहुत गहन और मार्मिक है। उन्होंने कहा कि महाभारत और रामचरितमानस, दोनों ही हमारे राष्ट्र की अमूल्य निधि हैं। वे हमारी आचार संहिता भी हैं। उन्होंने कहा है कि जो महाभारत में नहीं है वह ‘भारती’ में नहीं और जो रामचरितमानस में नहीं है वह भारती के ‘मानस’ में नहीं है। दूसरे शब्दों में महाभारत हमारे देश की आचार संहिता है। महाभारत में जो करणीय हैं वह हमारे देश में होना चाहिए और जो अकरणीय है उसके लिए हमारे देश में कोई स्थान नहीं है। रामचरितमानस में महत्त्वपूर्ण ..... के लिए आचार संहिता प्रेषित की गई है जिसमें मनुष्य के लिए जो करणीय है वह मनुष्य को करना चाहिए और जो निषेधिक किया गया है अर्थात् अकरणीय कहा गया है उसके लिए

भारती 'मानस' में कोई स्थान नहीं है। इस प्रकार महाभारत और रामचरितमानस क्रमशः इस देश और इस देश के वासियों की आचार संहिता है, विधि और निषेध की सूची हैं और उस मार्ग का किनारा है जो उत्कृष्टता की मंजिल तक पहुंचाता है।

### संगति

ज्ञान बढ़े गुनवान की संगत,  
ध्यान बढ़े तपसी संग कीनै।  
मोह बढ़े परिवार की संगति;  
लोभ बढ़े धन में चित्त दीनै।  
क्रोध बढ़े नर मूढ की संगत,  
काम बढ़े तिय के संग कीजै।  
बुद्धि, विवेक, विचार बढ़े,  
कवि 'दीन' सुसज्जन सुसंगति कीजै।

(मधुसंचय, 40/7, पृष्ठ-3)

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।  
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः॥

(Bhagvat Gita, Easwaran 2/33)

**One person in many thousands may seek perfections, yet of these only a few reach the goal and come to realize Me.**

रामकृष्ण काली के उपासक थे। अनेक दिन बीत गए, वे रोज रोते। घंटो पूजा करते। एक दिन क्रोध में आकर बोले— “मां! इतने दिन से बुला रहा हूं। तू आती ही नहीं। या तो तू प्रकट हो या मैं अप्रकट होता हूं। या तो तू रहे या मैं मिटता हूं।” तलवार हाथ में ले ली। गरदन पर चलाने ही वाले थे कि मां प्रकट हो गई। मूर्ति के स्थान पर वहां साक्षात् मां विराजमान थी। हंसती-खिलखिलाती सौंदर्य की प्रतिमूर्ति मां काली। तलवार फर्श पर गिर गई। वे छह दिन तक बेहोश पड़े रहे। सभी भक्त परेशान। छह दिन बाद जब होश आया तो जो पहली बात उन्होंने कही, वह यही कि इतने दिन तो मां तूने बेहोश रखा, अब जब छह दिन होश में रहा तो फिर बेहोशी में क्यों भेजती है! तू मुझे फिर से बुला ले। जा मत। रुक जा।

ऐसा प्रगाढ़ होता है समर्पित भक्त का अनुभव। यह चिन्मय का जलवा था, जो ठाकुर ने देखा। यह उनकी पहली समाधि थी।

(अखंड ज्योति, 71/9, पृष्ठ-26)

गीता के सातवें अध्याय के 16वें श्लोक में श्री कृष्ण कहते हैं कि ' चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।  
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥ '

'Good people come to worship Me for different reasons. Some come to the spiritual life because of suffering, some in order to understand life; some come through a desire to serve humanity, and some come seeking self-knowledge.'

उत्तम प्रकृति के लोग उनके कारणों से ईश्वर से निकटता प्राप्त करना चाहते हैं। प्रथम वे लोग हैं जो मानव मात्र को दुःखी और संतप्त देखकर आध्यात्म की ओर मुड़ जाते हैं और आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। दूसरे वर्ग के वे लोग हैं जो जीवन को समझ कर उससे साक्षात्कार करना चाहते हैं। वे जानना चाहते हैं कि मैं कौन हूँ, क्या हूँ, किसलिए हूँ और मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? तीसरे वर्ग में वे लोग हैं जो मानव मात्र की सेवा और कल्याण के लिए कुछ करने की चाह रखते हैं। और, चौथे वर्ग के लोग वे हैं जो केवल आत्मज्ञान की चाह से भगवान की शरण में जाते हैं।

इस श्लोक में चार प्रकार के उत्तम व्यक्तियों (good persons) के प्रकार बताए गए हैं। पर मुझे लगता है कि कई ऐसे उत्तम पुरुष भी हो सकते हैं जिनके व्यक्तित्व में चारों ही वर्गों का समावेश होता है। आज के इस आयोजन के संदर्भ में मैं यह कहने का साहस कर सकता हूँ कि इन चतुर्गुणों से विभूषित उत्तम पुरुष वे होते हैं जो 'भारत विकास परिषद्' के उत्कृष्टता सम्मान के लिए चुने जाते हैं।

गर दूर हो सवेरा /  
घनघोर हो अंधेरा /  
तो ये उसूल है मेरा /  
कि दिल का दीया जलाओ /

अजब अंधेर है इस दौर—पुर—आशोब में, राही।  
ज़रूरत जिनकी ज़ायद है, वही कम होते जाते हैं।।  
नज़र आती है तो बढ़ती हुई आबादियां लेकिन—  
तेरी दुनिया में, या रब! आदमी कम होते जाते हैं।।

विचित्र प्रगतिवाद है आज के संसार का। लोग तरक्की कर रहे हैं, T'चे उठ रहे हैं, आगे बढ़ रहे हैं। गिर भी पड़े हैं तो कह रहे हैं कि हम आगे बढ़ रहे हैं। एक संत विनोद में एक कहानी सुनाते हैं। एक प्रतियोगिता हुई, घुड़दौड़ की। घोड़ा बिगड़ल था। चुनौती यह थी कि उस पर सवारी करो और घोड़े को काबू करके दौड़ाओ। घोड़ा इतना उछल कूद कर रहा था कि उस पर सवारी करने को कोई एकाएक तैयार नहीं था। एक महाशय बोले कि हम करेंगे। आयोजकों ने कहा आइए। अब वे सज्जन किसी तरह घोड़े पर बैठे। घोड़ा उछला तो ये सज्जन एक हाथ आगे बढ़ गए। दूसरी बार उछला फिर एक हाथ आगे बढ़ गए। तीसरी बार भी ऐसा ही हुआ और ज्यों ही चौथी बार उछला तो वे सज्जन घोड़े के आगे जा गिरे। लोग हंसने लगे। वे सज्जन खड़े हो गए और बोले हंसने की कोई बात नहीं है। हम तो प्रगति कर रहे थे, आगे बढ़ रहे थे, अब घोड़ा ही कम पड़ गया तो हम क्या कर सकते हैं।

ऐसी प्रगति हो रही है कि नीचे गिरे हुए हैं और घोषणा यह कर रहे हैं कि हम तो प्रगति कर रहे हैं, आगे बढ़ रहे हैं।

संत 'भगवान का काम' करते हैं पर 'भगवान का काम' नहीं करते। विचित्र बात है। रामचरितमानस का एक प्रेरक प्रसंग है। हनुमानजी समुद्र पार करके लंका गए और लौट आए। तदनन्तर एक सेतु बना और राम रावण युद्ध जिसमें भगवान श्रीराम के हाथों रावण की मृत्यु हुई। एक जिज्ञासु ने प्रश्न किया कि इस सबकी आवश्यकता क्या थी? हनुमानजी तो सर्वसमर्थ थे। उन्होंने अशोक वाटिका उजाड़ी और जब राक्षसों ने उन्हें बांध लिया तो उन्होंने सारी लंका में आग लगा दी। एक विभीषण को छोड़कर किसी का घर बचा ही नहीं। जब लौटने लगे तो क्या राक्षसों ने उन्हें रोका नहीं होगा? किन्तु वे किसी बाधा से रुके नहीं। रावण को वे विजित कर सकते थे। चाहते तो सीताजी को भी लेकर आ सकते थे किन्तु संत श्री हनुमान ने अपनी मर्यादा

का पालन किया और कहा कि मुझे 'भगवान का काम करना' है अर्थात् भगवान ने जो काम मुझे सौंपा है वह करना है। मुझे 'भगवान का काम' नहीं करना अर्थात् जो काम स्वयं भगवान को करना है वह मेरा करना उचित नहीं है।

संत श्री हनुमान इस पार से उस पार गए और उस पार से इस पार लौट कर आए ताकि जो इस पार हैं उन्हें रास्ता दिखा कर फिर उस पार ले जा सकें। संत वही है जो उपलब्धि प्राप्त होने के उपरान्त अपने कार्य की इतिश्री समझ नहीं लेता, वह फिर लौट कर आता है क्योंकि जहां तक वह पहुंच गया है वहां तक उसे औरों को भी पहुंचाना है। यही स्थिति इस संत द्वय की है जिनका आज सम्मान किया जा रहा है। वे पहुंचे हुए हैं। Tपर उठे हुए हैं। फिर भी हमारे बीच इसलिए आ जाते हैं कि वे समझते हैं कि हम जैसे सांसारिक प्राणियों को भी उन्हें साथ लेकर चलना है हमें भी उठाना है और हमें भी पहुंचाना है जहां उनके नेतृत्व, उनके मार्गदर्शन और उनकी सहायता के बिना हम संभवतः नहीं पहुंच पाएंगे।

ऐसे कार्यक्रम में मुख्य अतिथि का आसन ग्रहण करते हुए मुझे संकोच होता है और अपनी न्यूनता और हीनता की भी अनुभूति होती है। फिर भी ऐसे निमंत्रण मैं स्वीकार कर लेता हूं, केवल स्वार्थ के वशीभूत। ऐसे आयोजनों में केवल उपस्थित होने का अवसर भी मिल जाए तो संतों के श्रवण और दर्शन का लाभ तो मिल जाता है किन्तु मुख्य अतिथि होने का विशेष लाभ यह है कि सम्मानित करने की क्रिया के माध्यम से उनका विशेष नैकट्य और स्पर्श का अवसर भी मिल जाता है जो अन्यथा नहीं मिल पाता।

गैर मुमकिन है कि दुनिया अपनी मस्ती छोड़ दे  
इसलिए दिल तू ही ये बेकार बस्ती छोड़ दे  
खूब तरसाया है तेरी ख्वाहिशों ने ही तुझे  
तू भी अब इन ख्वाहिशों को कुछ तरसती छोड़ दे

(गोस्वामी बिन्दुजी महाराज)

श्यामसुन्दर अब तो हम आशिक तुम्हारे हो गए  
तुम हमारे हो गए, हम तुम्हारे हो गए  
जब ये दिल दुनिया का था, दुश्मन हजारों हो गए  
जब ये दिल तुमको दिया, हर दिल को प्यारे हो गए

(गोस्वामी बिन्दुजी महाराज)

भारतीय विकास परिषद के केन्द्रीय कार्यालय ने, परिषद के अधिष्ठाता स्वर्गीय डॉ सूरज प्रकाश की स्मृति में 'उत्कृष्टता सम्मान' की स्थापना की गई जो प्रतिवर्ष ऐसे व्यक्ति या संस्था को दिया जाएगा जिसने सेवा और संस्कार के क्षेत्र में अतुलनीय एवम् उल्लेखनीय कार्य किया हो। यह पुरस्कार सम्मान के रूप में प्रस्तुत किया गया। इसमें 1 लाख रुपये की नगद राशि, अभिनन्दन पत्र, स्मृति चिन्ह, शॉल तथा श्रीफल भेंट किये जाने की व्यवस्था है। प्रथम 'उत्कृष्टता सम्मान' के लिए दो विभूतियों का चयन किया गया:-

1. श्री श्री राघवेश्वरा भारती महास्वामी जी

श्री रामचन्द्रपुर मठ

2. श्री स्वामीजी चिदानन्द सरस्वती जी

परमार्थ निकेतन आश्रम, ऋषिकेश, उत्तराखण्ड

चयन स्वर्गीय डॉ. एल. एम. सिंघवी के नेतृत्व में गठित समिति ने किया। यद्यपि सम्मान एक को ही दिया जाना था किन्तु इन दो विभूतियों में से एक का चयन कठिन था अस्तु दोनों को ही सम्मानित करने की अनुशंसा चयन समिति ने की। इस अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित श्री आर. सी. लाहोटी, पूर्व मुख्य न्यायाधीश, भारत ने अपना संबोधन दिया।

////////////////////////////////////